

**विक्रम संवत्-२०३६, श्रावण सुद-८, सोमवार, ता. १८-८-१८८०**  
**वचनामृत-१८७, प्रवचन नं. ११**

वचनामृत, १८७. 'प्रज्ञाछैनीको...' प्रथम बात सुनो. शुभ और आत्माकी शुद्धताको भिन्न करनेकी कला है. इसके बिना सब व्यर्थ है. अंतरमें 'प्रज्ञाछैनीको शुभाशुभ भाव...' शुभाशुभ भाव 'और ज्ञानकी सूक्ष्म अंतःसंधि...' सूक्ष्म भाव और ज्ञानकी-आत्माकी अंतर संधि. दोंके बीच संधि है, दोंके बीच दरार है. हमारी गुंजरती भाषामें तऽ कलते हैं. अंदर संधि है. 'ज्ञानकी सूक्ष्म अंतःसंधिमें पटकना.' जहां संधि है, वहां प्रज्ञाछैनीको पटकना. कहां? कि 'शुभाशुभ भाव और ज्ञानकी सूक्ष्म अंतःसंधिमें...' आलाहा..! मूल रकमकी बात है. इसके बिना, बिना अंकके शून्य है. मुख्य अंतर प्रज्ञाछैनीसे भिन्न हुआ बिना सब अनंत बार किया. अनंत बार नौवीं त्रैवेयक गया. जो चीज अंतरमेंसे होनी चाहिए वह हुई नहीं.

अहिन यहां वह कलती है. 'शुभाशुभ भाव और ज्ञानकी सूक्ष्म अंतःसंधि...' सूक्ष्म अंतःसंधि. धैर्यसे अंतर दो बीचकी संधिमें, धैर्यसे दो बीचके दरारमें पटकना. अरे..रे..! यह तो भाषा है, भाई! भाव तो अपना करना है कि नहीं? भाषा तो भाषा (है), भाषामें क्या? शुभाशुभ भाव और ज्ञान-भगवान, दोंके बीचकी संधि, दोंके बीच सूक्ष्म संधि है, सूक्ष्म अकेला है नहीं, अंदर दोनों भिन्न है. आलाहा..! उसमें पटकना. आलाहा..!

'उपयोगको बराबर सूक्ष्म करके...' शुद्ध उपयोग. शुभाशुभसे तो रहित. शुद्ध उपयोग प्रथम सम्यग्दर्शन पानेको सूक्ष्म शुद्ध उपयोगको बराबर सूक्ष्म करे अर्थात् शुद्ध करके. 'उन दोनोंकी संधिमें...' रागका विकल्प और ज्ञानकी संधिके बीचमें 'सावधान होकर...' भाषा तो सादी है, भाव तो अपूर्व है, प्रभु! अंदरमें धीरजसे, सावधानीसे, शांतिसे रागके विकल्पकी जातकी दिशा परकी ओर है और ज्ञानकी दिशा स्वकी ओर है, जैसे दोंके बीच संधि है, उसमें वहां ज्ञानकी अकाग्रता सूक्ष्म उपयोग करके भिन्न करना. पटकना अर्थात् दोंको भिन्न करना. आलाहा..! ऐसी बात है, प्रभु! पहली यह तो शुरूआतकी बात है. सम्यग्दर्शन होनेके कालमें ऐसी स्थिति होती है. इसके बिना सम्यग्दर्शन होता नहीं. सम्यग्दर्शन बिना जो कुछ होता है, वह संसार है.

आलाला..!

‘उपयोगको बराबर सूक्ष्म करके...’ कोई ऐसा पूछता था, सूक्ष्म कैसे करना? प्रभु! सूक्ष्म उसको कहते हैं कि पर ओरका जुकाव छूटकर, स्वकी ओरका जुकाव जो होता है उसको सूक्ष्म उपयोग कहते हैं. आलाला..! सूक्ष्म उपयोग (करके) ‘सावधान होकर उसका प्रहार करना.’ दोनोंकी संधिमें. आलाला..! अनंत-अनंत कालमें प्रभु यौरासीके अनंत अवतार किये. साधुपना भी अनंत बार लिया, द्विगंबर मुनि अनंत बार हुआ, लेकिन आत्मज्ञान बिना कुछ हुआ नहीं. भव कम हुआ नहीं और अनंत भव रहे.

विंगपालुडमें तो प्रभु ऐसा कहते हैं कि षतनी बार द्रव्यविंग धारण किया, धारण करनेके बाद कोई अेक कण बाकी नहीं कि जिसमें अनंत भव नहीं किये हो. ढाई द्विप आदिमें कोई कण बाकी नहीं है कि द्रव्यविंग धारण करनेके बाद अनंत भव नहीं किये हो. आलाला..! ऐसा विंगपालुडमें कुंदकुंदाचार्य महाराज कहते हैं. विंग तो अनंत बार धारण किया, नम्र हुआ, महाप्रत धारण किया, वह सब तो पर जडकी थीज है. आला..!

अंतरमें उसका प्रहार करना, सावधान होकर बराबर सूक्ष्म उपयोग करके. आलाला..! ‘सावधान होकर बराबर सूक्ष्म उपयोग करके, बराबर लक्षण द्वारा पहचानकर.’ अंदर लक्षण द्वारा अर्थात् राग है वह आकूलता है और प्रभु है वह अनाकूल आनंद है. वह ज्ञान, दर्शन और आनंद है. ऐसा दो का लक्षण सूक्ष्मपने सावधान होकर ज्ञानकर दो बीचमें अेकत्वकी संधि तोडना. आलाला..! शब्द तो प्रभु! थोडे हैं. वह तो बहिनने कहते वक्त बोल दिया है. नहीं तो उनको तो कुछ पडी नहीं. बहिन तो अतीन्द्रिय आनंदमें रमते हैं. आला..! अतीन्द्रिय आनंदके स्वादमें उसको किसीकी पडी नहीं है. ये किसीने विभ लिया षसलिये बाहर आया. नहीं तो आता नहीं. आलाला..! पांच पंक्तिमें कितना है!

‘सूक्ष्म उपयोग करके बराबर लक्षण द्वारा पहचानकर.’ लक्षण द्वारा. आत्माका आनंद और ज्ञान लक्षण है. और रागका दुःख और आकूलता लक्षण है, ऐसा दो बीचमें लक्षणको पहचानकर, सावधान होकर, धीरजसे दो बीचकी अेकता तोड दे. अेकता तो है नहीं, है तो भिन्न ही है, फिर भी भिन्नमें अेकता मानी है. मानी है उसे तोडना है. प्रभु तो त्रिकावी निरावरण (है). तीनों काल परमात्मा स्वयं स्वर्ण है वह तो निरावरण है. चैतन्यबिंब परमात्मा त्रिकाल निरावरण, सर्वांग निरावरण (है). वह आया है. जयसेनाचार्यकी टीकामें. आलाला..! प्रभु तो सकल

निरावरण अजंड अेक प्रत्यक्ष प्रतिभासमय अविनश्वर सूक्ष्म पारिणामिक परमभाववक्षण, अैसा अेक परमद्रव्य उसमें अेकाग्र हो ञा. आलाला..! यह शब्द वलकें है. टीकाके, संस्कृत टीकाके हैं. वल कलते हैं. अब दृष्टांत देते हैं.

‘अल्रकके पर्ते कितने पतले लोते हैं...’ अल्रक. अल्रक कलते हैं न? अल्रक नलीं कलते? अलुत पतले पर्ते, अलुत पतले पर्ते. अेकको निकालने ञाये तो दूसरेका टूकडा लो ञाय. अलुत पतले. आलाला..! ‘अल्रकके पर्ते कितने पतले लोते हैं...’ अल्रकके पर्ते, पर्ते यानी पत्ता, कितना पतला सूक्ष्म लोता है. ‘किंतु उन्हें अराअर सावधानीपूर्वक...’ धीरसे, धीरअसे ‘अलग किया ञाता है,...’ आलाला..! पत्ता तो अैसा लगे कि मानो अेक छूटे तो अेकसाथ सब (छूट ञायेंगे). धतने पतले हैं. अल्रक. हमारे वहां था. व्यापारमें. व्यापारमें हमारे पास आता था. सब व्यापार किया है न. सब चीअ रअते थे. अदाम, यारोणी, पिस्ता (आदि सब). यह अलग चीअ है. अल्रकके पर्ते भिन्न करनेमें...

‘उसी प्रकार सूक्ष्म उपयोग करके स्वभाव-विभावके बीय...’ ञैसे पर्तेको भिन्न करनेमें धीरअ और सावधानी लोनी यालिये. ‘उसी प्रकार सूक्ष्म उपयोग करके स्वभाव-विभावके बीय...’ स्वभाव और विभावके बीय. भगवान आनंदस्वरूप परमात्मा त्रिकाल आनंदमें विराअता है. रागका अंश उसमें है नलीं. और रागका अंश है वल दुःअरूप है और यह आनंद है. आनंद और दुःअको अराअर स्वभाव-विभावके बीय. विभाव दुःअरूप है, स्वभाव आनंद अतीन्द्रिय आनंदकी शांतिरूप है. आलाला..! अेक अंशका स्वाद-आत्माका आनंदका अेक अंशका स्वाद, धन्द्रका धन्द्रासन उसके सामने कुछ गिनतीमें नलीं आता. अैसी यमत्कारिक प्रभु चीअ है. आलाला..! अैसा आत्मा अंतरमें अपना अतीन्द्रिय आनंदका दल, अतीन्द्रिय आनंदका पिंड और राग आकूलताका सागर. आकूलताका प्रवाल है वल तो. आलाला..! क्योकि यह नित्य वस्तु है और राग तो पलटता है. प्रवाल है, प्रवाल. आकूलताका प्रवाल है. भगवान आनंदका धाम, प्रवाल नलीं आनंदका धाम है. आलाला..!

‘स्वभाव-विभावके बीय प्रज्ञा द्वारा भेद कर.’ प्रज्ञा द्वारा भेद कर. कियाकांडसे भेद लोता नलीं. आलाला..! ञैन दिगंबर साधु नौवीं त्रैवेयक गया. उसकी किया सुनो तो.. ओलो..! शरीर अर्ण लो गया, अलुत किया की. उसमें क्या लुआ? भगवान आत्मा आनंदका सागर भरा है. उसका पत्ता न ले. वल सागरकी भान है, उसका पत्ता न ले तअतक सब व्यर्थ है. आलाला..! व्यवहारवालेको कठिन लगे. व्यवहार है. लो, सब व्यवहार तो है ली. लेकिन व्यवहारसे आत्मामें ञाता नलीं. आलाला..!

वह कहते हैं.

‘प्रज्ञा द्वारा भेद कर. जिस क्षण विभावभाव वर्तता है उसी समय...’ जिस क्षण, जिस काल अंतरमें पर ओरका जुकाववाला राग वर्तता है, ‘उसी समय ज्ञातृत्वधारा द्वारा स्वभावको भिन्न ज्ञान वे.’ उसी समय ज्ञातृत्वधारा द्वारा. आह्लाहा..! मूल बात कही है, प्रभु! आह्लाहा..! ‘जिस क्षण विभावभाव वर्तता है उसी समय ज्ञातृत्वधारा...’ अंदर पडी है. आह्लाहा..! ‘ज्ञातृत्वधारा द्वारा स्वभावको भिन्न ज्ञान वे.’ ज्ञातृत्वधारा द्वारा. क्या कहते हैं? रागकी धारा तो क्षण क्षणमें पलटती है. और यह तो ज्ञानपिंड, आनंदपिंड पलटता नहीं. वैसा का वैसा आनंद रहता है. ध्रुव ध्रुव पिंड रहता है. आह्लाहा..! चैतन्यका आनंदका पिंड-दल पलटे बिना ध्रुव सत् दल, सत्त्व रहता है. उसके द्वारा ‘स्वभावको भिन्न ज्ञान वे.’ आह्लाहा..! बात तो मुद्देकी आयी है.

व्यवहार है भिन्न. भगवानसे भिन्न है. व्यवहार द्वारा भिन्न नहीं होगा. आह्लाहा..! याहे जैसे व्यवहार हो, शुभभाव याहे जितना हो, नौवीं त्रैवेयक गया, शुभभाव शुक्लवेश्यासे. शुक्लवेश्यासे गया. शुक्लवेश्या तो छठे देवलोकसे शुक्लवेश्या होती है. छठे स्वर्गमें अनंत बार गया. सातवेमें, आठवेमें अनंत बार और नौवेमें भी अनंत बार गया. वह शुक्लवेश्यासे गया है. शुक्लवेश्या. शुक्लध्यान अलग और शुक्लवेश्या अलग. शुक्लवेश्या तो अभाविको भी होती है. और शुक्लध्यान ध्यानमें आठवें गुणस्थानसे होता है. शुक्लवेश्या और शुक्लध्यान, दोमें षतना ईर्क है. आह्लाहा..!

‘स्वभावको भिन्न ज्ञान वे. भिन्न ही है...’ है? भिन्न ज्ञान वे ऐसा कहा. फिर कहा, भिन्न हुआ. भिन्न था ही तो भिन्न हुआ है. भिन्न हुआ तो भिन्न था ही वह भिन्न हुआ है. आह्लाहा..! गजब है! प्रभु! ऐसी बात तो गजब, नाथ! तेरी शक्ति, तेरा बल, तेरी विचक्षणता, तेरी अचिंत्य धारा..! आह्लाहा..! अलौकिक बात है. दुनियामें मान मिले, बडी सत्ता हो, लोग ईकठे हो, .. उसमें कोई माव नहीं है. देह छूटने पर वह कोई साथ नहीं आता. समाधि-अंदर शांति प्रगट की होगी, वह शांति साथमें आयेगी. आह्लाहा..! रागसे भिन्न शांति और आनंद यदि प्रगट किया होगा, वह साथमें आयेगा. दुनियाकी प्रशंसा, ईच्छत और कीर्ति वहां कुछ काम नहीं आयेगा.

ईसलिये कहते हैं कि भिन्न कर. क्यों? कि भिन्न ही है. भाषा अलग है. आह्लाहा..! ‘भिन्न ज्ञान वे.’ ‘ज्ञातृत्वधारा द्वारा स्वभावको भिन्न ज्ञान वे.’ भिन्न ज्ञान तो उसका अर्थ कि भिन्न ही था, भिन्न ही है. राग और ज्ञानधारा कभी अेक दुई

नहीं. आलाला..! सूक्ष्म बात आयी. आलाला..! ...सूक्ष्म कर, भिन्न कर. भिन्न कर. कारण? भिन्न ही है. भिन्न कर, कारण भिन्न ही है. आलाला..! सादी भाषा, साधारण चार पुस्तक पढा हो उसे भी ज्वालमें आये. यहां कोई अंग्रेज विशेष पढा हो तो ही ज्वालमें आये, ऐसा नहीं है. आलाला..!

‘भिन्न ही है परंतु तुझे नहीं भासता.’ तेरी दृष्टिमें द्रव्यकी ओरका जुकाव नहीं है और अंतरमें गहराईमें रागकी सूक्ष्मताकी ओर जुकावके कारण, सूक्ष्म रागमें भी जुकावके कारण तुझे लगता है कि मुझे कुछ राग घट गया. घटा नहीं है. आलाला..! ‘परंतु तुझे नहीं भासता. विभाव और ज्ञायक हैं तो भिन्न-भिन्न ही.’ भगवान आत्मा ज्ञायक ध्रुव चैतन्यप्रभु और विकल्प-राग, दोनों भिन्न-भिन्न ही है. भिन्न-भिन्न ही. ‘विभाव और ज्ञायक हैं तो भिन्न-भिन्न ही.’ दोनों है तो भिन्न-भिन्न ही. आलाला..! ऐसी बात सूक्ष्म लगे न. लोगोंको स्थूल बातका उपदेश देकर, लोग राज हो. और सेठ लोगोंको कुरसद नहीं मिलती. फिर ऐसी बात सुनकर.. ङिंढगी पूरी कर ले. पन्नावावज! यह तो दृष्टांत है. आलाला..!

यह चीज... आलाला..! मलाभाज्य कि ऐसी वाणी सुनने मिले. अंतरमें काम करना तो उसका काम है. यहां कोई वाणी काम करेगी नहीं. वाणी सुनी और धारण की, धारणा की उससे कोई काम होगा नहीं. आलाला..! वाणी सुनने मिली और उसका ज्वाल आया तो उस ज्वालसे जुदा नहीं पड़ेगा. वह ज्वाल तो पराधीन दशा है. आलाला..! कहां ले ज्ञाना है? प्रभु! कहते हैं कि तेरी चीजको सूक्ष्म कहते हैं. तुझे सुनने मिलता है तो कानको भी छूती नहीं, परंतु तेरे ज्ञानकी पर्याय उस समयकी ऐसी योग्यता कमबद्धमें आनेवाली है तो आयी. परंतु उससे धारणा हुई. उससे भिन्न हुआ नहीं. आलाला..! समझमें आया?

‘जैसे पाषाण और सोना अकमेक दिभने पर भी...’ गिरनारमें पत्थर और सोना बहुत है. लेकिन उतना सोना नहीं है. सौ रुपयेका भ्रय करे तब चालीस-पचासका सोना निकले. गिरनार. गिरनार पर्वतमें सोनाकी गांठ बहुत है. और सोनेका कारभाना भी किया था. सोना निकालनेके लिये. लेकिन सौ रुपयेका भ्रय और चालीस-पचासका सोना निकले. कारभाना बंद कर दिया. आलाला..!

यहां कहते हैं, भगवान! ‘पाषाण और सोना अकमेक दिभने पर भी भिन्न ही हैं...’ पत्थर और सोना अक नहीं हुआ. ‘तदनुसार.’ ज्ञायक और विभाव दोनों भिन्न ही है. अक कभी हुआ नहीं. तेरी मान्यताने माना है. आलाला..! सूक्ष्मपने अंतरमें ज्ञाना. और रागसे भिन्न होकर, भिन्न चीज पडी है उसको पकड़नेके लिये,

प्रभु! तूने सावधानी की नहीं. आलाला..! इसलिये उसे टुप्पर लगता है. बाकी वस्तु तो सलज है. सलज वस्तु ही वह है. सख्यिदानंद प्रभु आनंदका कंद अंदर बिराजता है. आलाला..! 'भिन्न ही हैं तदनुसार.' पत्थर और सोना जैसे भिन्न है तदनुसार. विभाव और ज्ञातृधारा बिलकूल भिन्न है. ज्ञातृधारा सोना समान है, राग पत्थर समान है. आलाला..! बहुत अच्छी बात आयी है. वस्तु तो यह है. प्रथममें प्रथम कर्तव्य यह है. स्थिरता बादमें होगी. जो चीज देभी नहीं, वेदनमें आयी नहीं, उसमें स्थिरता कहांसे आयेगी? स्थिरता अर्थात् चारित्र. जो चीज दृष्टिमें आयी नहीं, ज्ञानमें ज्ञेयका भास हुआ नहीं, उसका वेदन हुआ नहीं, तो स्थिरता कहांसे होगी? उसके बिना स्थिरता बालरकी होगी. शुभरागकी मंदता आदि बहुत किया. मान ले कि हम कुछ तो करते हैं. आलाला..!

'प्रश्न :-' सोना और पत्थरका दृष्टांत दिया, इसलिये प्रश्न करते हैं. 'सोना तो यमकता है इसलिये पत्थर और सोना-दोनों भिन्न ज्ञात होते हैं, परंतु यह कैसे भिन्न ज्ञात हो?' पत्थर और सोना तो भिन्न यमकते हैं. सोना तो यमकता है तो भिन्न कर सकते हैं. 'परंतु यह कैसे भिन्न ज्ञात हो?' आत्मा और राग, कैसे भिन्न हो? उसमें तो यमकता है, इसलिये यमक परसे जुदा किया. सोना यमकता है, इसलिये पत्थर यमकता नहीं, र्तना लक्षण देभकर सोनेको भिन्न कर दिया. प्रभु! आत्माको कैसे भिन्न करना?

'उत्तर :-' यह ज्ञान भी यमकता ही है न?' प्रभु! आलाला..! जैसे सोना यमकता है और उससे तुजे भिन्न भासता है. 'यह ज्ञान भी यमकता ही है न.' यमकता ही है न. है. भगवान आत्मा शरीरमें अंदर भिन्न ज्ञान यमकता है. आलाला..! 'विभावभाव नहीं यमकते..' जैसे पत्थर नहीं यमकता, सोना यमकता है तो भिन्न करके निकाल दिया. वैसे यहां ज्ञान भी यमकता ही है न. आलाला..! ज्ञान यमकता है. ज्ञानन.. ज्ञानन.. ज्ञानन... इस स्वभावके अस्तित्वसे आत्मा तो ज्ञानके अस्तित्वसे, ज्ञानसे यमकता ही है. आलाला..! विभाव नहीं यमकता. रागका विकल्प है उसमें यमक नहीं है. यमक नहीं है अर्थात् उसमें ज्ञान नहीं है. राग कुछ ज्ञानता नहीं, वह तो जड है. ज्ञाननेवाला यमकता है. ज्ञानसे आत्मा भगवान यमकता है. आलाला..!

'किंतु सर्वत्र ज्ञान ही यमकता है...' आलाला..! विभाव नहीं यमकते. आलाला..! पुण्य और पाप, दया, दान, प्रतादिके विकल्प यमकते नहीं. वह तो अशुभ है, जड है. उसमें चैतन्यपना है नहीं. आलाला..! 'किंतु सर्वत्र ज्ञान ही यमकता है...' तूने ध्यान दिया नहीं. अंदरमें तो ज्ञान ही यमकता है, राग नहीं यमकता है.

आलाला..! 'किंतु सर्वत्र ज्ञान ही यमकता है-ज्ञात होता है.' क्या कला? 'ज्ञानकी यमक चारों ओर डैव रही है.' आलाला..! ज्ञानकी यमक चारों ओर डैव रही है. सबको ज्ञानना, अपनेको ज्ञानना जैसा ज्ञान यमक रहा है. समझमें आया? 'सर्वत्र ज्ञान ही यमकता है-ज्ञात होता है.' ज्ञाननेमें ज्ञान ही यमकता है. प्रभु! थोड़ी दृष्टि दे तो राग यमकता नहीं. राग तो अंधा है. जड है, अज्जव है. ज्ञान भगवान रागसे भिन्न यमकता ही है और भिन्न रहकर यमकता है. आलाला..! भाषा बहुत थोड़ी है. माव है. 'ज्ञानकी यमक चारों ओर डैव रही है.'

'ज्ञानकी यमक बिना...' अब दृष्टांतके साथ मिलान करते हैं. 'ज्ञानकी यमक बिना सोनेकी यमक कालेमें ज्ञात होगी?' क्या कहते हैं? ज्ञानकी यमक बिना सोनेकी यमक कालेमें ज्ञात होगी? किसमें ज्वाव आयगा? सोनेकी यमक भी ज्ञानमें ज्वावमें आयी है. आलाला..! बहुत अच्छी बात है. मुद्देकी बात यह है. करनेकी चीज प्रभु! मनुष्यदेह मिला, नाथ! उसमें करना यह है. ईश्वर और दुनिया, सब अके ओर रज दे. करनेकी तो यह अके चीज है. दुनिया माने, न माने उसके साथ तेरा कोई संबंध नहीं है. यहां तो कहते हैं, रागके कालमें भी ज्ञानकी ही यमक है. राग तो ज्ञानता नहीं. ज्ञानता तो ज्ञान है. रागके कालमें भी ज्ञानकी ही यमक है. सोनाकी यमक ज्ञान ज्ञानता है. पत्थरको मावूम है. सोनेकी यमक ज्ञान ज्ञानता है. वैसे अपनी यमक स्वयं ज्ञानता है. उसमें कोई राग या विकल्पकी जरूरत नहीं है. आलाला..! 'ज्ञानकी यमक बिना सोनेकी यमक कालेमें ज्ञात होगी?' आलाला..! प्रभु! तूने विचार नहीं किया है. यमकके अंदर ज्ञान यमकता है. उसमें सब भासता है. यमक तो ज्ञानकी है. उसके सिवा दूसरी कोई यमक नहीं है. दूसरी कोई चीज ज्ञानती नहीं. सोनेका भान भी ज्ञानमें हुआ न? यह सोनेकी यमक है, जैसा ज्ञानमें ज्ञाननेमें आया न? तो ज्ञानने प्रसिद्ध किया.

'जैसे सख्ये मोती और जोटे मोती एकट्ठे लों...' अब दूसरा दृष्टांत (देते हैं). पहला पत्थर और सोनेका दिया. दूसरा दृष्टांत. 'जैसे सख्ये मोती और जोटे मोती एकट्ठे लों तो मोतीका पारभी...' यह शर्त है. सख्ये-जोटे मोती पडे हैं. लेकिन मोतीका पारभी-यह शर्त है. पारभी नहीं हो तो सब एकट्ठा ले ले. आलाला..! मोतीकी परज जिसको है, आलाला..! 'उसमेंसे सख्ये मोतियोंको अवग कर लेता है.' मोतीका पारभी. शर्त यहां है. सख्ये मोतीका जिसको ज्वाव है, सख्ये मोतीका जिसको ज्ञान है वह सख्ये मोती ले लेगा. सख्ये मोती और जूठे, दोनों अकेसाथ, सख्ये मोतीका जिसको ज्वाव है, वह ज्वाववाला सख्ये मोतीको उठा लेगा. आलाला..!

‘सख्ये मोती और जोटे मोती एकट्ठे लों तो मोतीका पारभी...’ वजन यहां है. सख्ये मोतीकी किंमत जिसको है. हिरा होता है न? हिरेकी छतनी छोटी कण्ठी होती है, लज्जरों रूपा. बताने आये न. अक बार देखा था. अस्सी लज्जरका. अक हिरा अस्सी लज्जरका. राजकोट यातुर्मासि था. नानावालभाईके भाई बेयरभाई थे. अक बार लाये थे, बताया था. अक हिरा. लेकिन वह तो बडा हिरा था. अस्सी लज्जरका. ये तो छोटे-छोटे यमकते (हैं). बलिनको वधायेंगे न. छोटे-छोटे यमकते हैं. पांच-पांच लज्जरके हिरे. पांच-पांच लज्जरके, छ-छ लज्जरके, पंद्रह लज्जरके, दस लज्जरके. बारीक-बारीक कण्ठी. उसकी यमककी परीक्षा जिसे लो वह उठा वेगा. उसकी परीक्षा जिसको है वह ले वेगा. दूसरा तो कांचके टुकडेमें हिरा मानेगा. आला..ला..!

पहले ऐसा था, सोनीकी दुकानके पास आता था. धूणधोया. देखा है, हमने प्रत्यक्ष देखा है. सोनीकी दुकानमें करते थे. मैं भडा था. अस्सी साल पहलेकी बात है. उसमें तीन प्रकारके टुकडे दिजे. अक दिजे सोनेका टुकडा, अक दिजे पीतलकी छोटी कण्ठी और अक देजे कुंगन. कुंगन लोते हैं न? कांचके कुंगनमें पीला रंग होता है न? उसकी कण्ठी होती है. तीनों कण्ठीको पहचान लेता है. कांचकी कण्ठी लवकी होती है, पीतलकी कण्ठी भी तोवदार नहीं होती और सोनेकी कण्ठी तोवदार होती है. आला..ला..! करते थे, पहले. सोनीकी दुकानमें अक साल, दो साल लोनेके बाद थोडा-थोडा पडा होता है.

यहां भगवानकी दुकानके पास बडे-बडे भगवान विराजते हैं, ऐसा कहते हैं. तुजे परभना नहीं आता. भगवान विराजता है, अकेली ज्ञानकी यमकसे. ज्ञानकी यमकसे अकेला परमात्मा विराजता है. रागको भी ज्ञाननेवाला है कौन? दया, दानका विकल्प है उसको ज्ञाननेवाला है कौन? ज्ञाननेवालेमें वह नहीं है. दया, दानका परिणाम ज्ञाननेवालेमें नहीं है. ज्ञाननेवालेमें नहीं और दया, दानके परिणाममें ज्ञाननेवाला नहीं है. आला..ला..! दोनों भिन्न हैं. परंतु जिसको परीक्षा है, ज्याल है, सख्ये-जूठे मोतीका, वह मोती ले लेता है.

‘पारभी उसमेंसे सख्ये मोतियोंको अलग कर लेता है,...’ वजन यहां है. ज्याल भी नहीं और अंधा लोकर चलता है. अनादि कालसे अंधा चल रहा है. ‘सख्ये मोतियोंको अलग कर लेता है, उसी प्रकार आत्माको ‘प्रज्ञासे ग्रहण करना.’ यमकसे ग्रहण करना. ज्ञानकी यमक. रागकी यमक नहीं है. ऐसी सूक्ष्मतासे अंदरमें जाकर ज्ञानकी यमकतासे ज्ञानको पकड लेना. ‘उसी प्रकार आत्माको ‘प्रज्ञासे ग्रहण करना.’ आला..ला..! विधि तो अलौकिक कही है. यह बलिनके शब्द हैं. अनुभवमेंसे आये

हैं. अतीन्द्रिय आनंदका अनुभव (है). अतीन्द्रिय आनंदके अनुभवमेंसे यह वाणी आयी है. आलाला..! उसमें यह बात निकल गई और बाहर आ गयी.

‘प्रज्ञासे ग्रहण करना’. जो ज्ञाननेवाला है सो मैं...’ अंदर जो ज्ञाननेवाला है वह मैं. जिसमें ज्ञाननेमें आये, राग-द्वेष, विभाव ज्ञाननेमें आय, जो शीघ्र ज्ञाननेमें आयी वह मैं नहीं, परंतु ज्ञाननेवाला मैं हूं. सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञानकी बात बहुत बढल गई. बाहरकी बात र्तनी हो गई कि उसीमें यड गये. मूल सम्यग्दर्शन और ज्ञान पहले प्रगट करनेकी शीघ्र है. वहां प्रयत्न करना और दूसरा प्रयत्न छोड देना. आलाला..! आत्माको ‘प्रज्ञासे ग्रहण करना’. जो ज्ञाननेवाला है सो मैं, जो देजनेवाला है सो मैं’ आलाला..! ‘ईस प्रकार उपयोग सूक्ष्म करके...’ ईस प्रकार उपयोगको सूक्ष्म करके. जिसमें रागको ज्ञाननेवाला जूटा पड जाय और जूटा है ही. जैसे सूक्ष्म उपयोगसे पकड ले. आलाला..!

‘उपयोगको सूक्ष्म करके आत्माको और विभावको पृथक् किया जा सकता है.’ आत्माको और रागको सूक्ष्म अंतर ज्ञानमें पृथक् किया जा सकता है. आलाला..! ‘यह पृथक् करनेका कार्य प्रज्ञासे ही होता है.’ यह पृथक् करनेका कार्य प्रज्ञासे ही होता है. अकांत किया. कोई व्यवहार कियाकांड करनेसे, दया, दान या व्रत करनेसे (नहीं होता). व्यवहार है सही, लेकिन उससे यह पकडमें आता है, ऐसा है नहीं. आलाला..!

मुमुक्षु :- प्रज्ञा माने क्या?

उत्तर :- प्रज्ञा अर्थात् ज्ञान. प्रज्ञा. प्र-विशेषरूपसे, ज्ञ. जो भास भिन्न ज्ञाननेवाला प्रज्ञा. प्र-विशेषरूपसे, ज्ञ-ज्ञाननेवाला. परकी अपेक्षा रभे बिना. अपनी यमकमें-अपनी प्रज्ञासे रागसे भिन्न करना. आलाला..! सूक्ष्म बात है, भाई! यहां तो उपदेश दूसरे प्रकारसे चलता हो. स्थूल हो तो लोगोंको ठीक लगे. ऐसा करो, वैसा करो, ऐसा करो, मंदिर बनाना, गिरनारकी यात्रा करनी, शिखरज्जकी यात्रा करनी. आलाला..! प्रभु! मार्ग बहुत सूक्ष्म है. वह सूक्ष्म मार्ग पकडे बिना जन्म-मरणका अंत आता नहीं, प्रभु! और जन्म-मरणका अंत लुअे बिना, प्रभु! क्या किया? आलाला..! अवतार तो अेक नहीं, जैसे अनंत-अनंत अवतार (किये). आलाला..! नर्ककी वेदना.. आलाला..! याद करते-करते आचार्य कहते हैं, घाव लगता है. पूर्वकी वेदना स्मरण करते हैं, स्मरण लेते हैं तो हमको घाव लगता है. वादिराज कहते हैं. कभी विचार भी कहां किया है कि नर्कमें कितना दुःख है. आलाला..!

‘आत्माको और विभावको पृथक् किया जा सकता है. यह पृथक् करनेका कार्य

प्रज्ञासे ही होता है. व्रत, तप या त्यागादि लबे लों,...' उससे वह पृथक् नहीं हो सकता. आलाला..! 'परंतु वे साधन नहीं होते,...' रागकी मंदताकी किया, व्रत, तप आदि, त्यागादि 'साधन नहीं होते,...' कठिन पडे जगतको. अक तो निश्चयसे ऐसी बात है कि आत्माके सिवा परवस्तुका त्यागग्रहण मिथ्यात्व है. परका त्याग और ग्रहण मानना वह मिथ्यात्व है. क्योंकि आत्मामें त्यागउपादान नामकी शक्ति-त्यागग्रहण करना, लेनकी रहित शक्ति त्रिकाव पडी है. आत्मामें वह शक्ति त्रिकाव पडी है. परका त्याग और ग्रहण आत्मामें है ही नहीं. त्यागउपादानशून्यत्व शक्ति. ४७ शक्तिमें १६वीं है. आलाला..! उस ओर तो ध्यान नहीं (और) बाहरके त्यागादि उपर पूरा वजन जाता है. उससे कोरि प्यावमें नहीं आता. आलाला..! वह कोरि साधन नहीं है.

'साधन तो प्रज्ञा ही है.' आलाला..! प्रज्ञा अर्थात् ज्ञानकी छैनी. राग और ज्ञानके बीच संधि है, दरार है, उसमें पटक. तेरी चीज भिन्न हो जायेगी. भिन्न ही है. भिन्न ही है. भिन्न हो जायेगी. यदि भिन्न न हो तो भिन्न होती नहीं. आलाला..! रागसे यदि अकमेक हो, स्वरूप चैतन्यसे राग अकमेक हो तो रागसे कभी छूटे नहीं. सोना और सोनेका पीलापन अकमेक है. कभी छूटेगा? वैसे भगवान आत्मा प्रज्ञा और आत्मा, ये दोनों अक ही है. उससे कभी छूटता नहीं. प्रज्ञासे ही रागसे भिन्न होगा. दूसरी कोरि किया है नहीं. आलाला..! ये तो बहिन रातको बोले लोंगे, उसे विभ विधा और बाहर आ गया. आलाला..! अभी नहीं आते. (स्वास्थ्य) नरम है.

'स्वभावकी महिमासे परपदार्थके प्रति रसबुद्धि-सुभबुद्धि टूट जाती है.' कोरि कियाकांडसे नहीं. स्वभावकी महिमासे. भगवान आत्मा ज्ञान और आनंद जिसका त्रिकावी स्वभाव है. जैसे उष्णता अग्निका त्रिकावी स्वभाव है, जैसे ज्ञान और आत्माका त्रिकावी स्वभाव है. इस 'स्वभाकी महिमासे परपदार्थके प्रति रसबुद्धि-सुभबुद्धि टूट जाती है.' कुछ भी अधिक-हीक लगे कि इसमेंसे कुछ मिलेगा, प्रज्ञाछैनीमें वह सब छूट जाता है. कुछ रागकी मंदताकी किया करता हो, करते-करते कुछ लाभ होगा.. आलाला..! वह मिथ्यात्व भाव है. आलाला..! यहां तो 'स्वभावकी महिमासे परपदार्थके प्रति...' व्यवहार रत्नत्रयके प्रति भी 'रसबुद्धि-सुभबुद्धि टूट जाती है.'

'स्वभावमें ही रस आता है,...' आलाला..! स्वभाव. स्व-भाव. चैतन्यका स्व भाव. वह स्वभाव ज्ञान और आनंद (है). आलाला..! उसका स्वरूप-भगवान आत्माका स्व रूप. स्व अपना रूप ज्ञान और आनंद. आलाला..! अपने रूपमें.. आलाला..!

रस आता है. 'स्वभावमें ही रस आता है,...' आलाला..! व्यवहार रत्नत्रयके रागमें भी द्रुःभ लगता है. ज्ञानीको उसमें द्रुःभका रस लगता है. और स्वभावमें ही रस लगता है. 'दूसरा सब नीरस लगता है.' भगवान आत्माके आनंदके सिवा.. सिवाय कलते हैं? अलावा. सब रस टूट जाता है. और दूसरा सब नीरस लगता है. कहीं रस नहीं लगता. शुभभावमें भी रस लगता नहीं. आला..!

'तभी अंतरकी सूक्ष्म संधि ज्ञात होती है.' स्वभावमें रस आता है, दूसरा सब नीरस लगता है तभी, तब अंतरकी सूक्ष्म संधि-अंतरकी सूक्ष्म सांध. रागका विकल्प और स्वभाव, दोनों भिन्न है, ऐसी सूक्ष्म संधि तभी अंतरमें ज्ञात होती है. स्वका रस आता है और परका रस टूट जाता है. 'ऐसा नहीं होता कि परमें तीव्र रुचि हो...' अंदरमें रुचि रागमें, पुण्यमें, सूक्ष्म शुभमें भी रुचि रहे 'और उपयोग अंतरमें प्रज्ञाछैनीका कार्य करे.' ऐसा बनता नहीं. आलाला..!

(श्रोता :- प्रमाण वचन गुरुदेव!)